गणपत्यथर्वशीर्ष

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि।
त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि।
त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि।
त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम्॥ १ ॥

ॐ। गणों के देव, भगवान गणपति को नमन।
आप ही तत्त्वमसि का प्रत्यक्ष रूप हैं।
केवल आप सृजनकर्ता हैं।
केवल आप पालनकर्ता हैं।
केवल आप संहारक हैं।
यह सब कुछ आप ही हैं। आप ही ब्रह्म हैं।
आप साक्षात् आत्मा हैं जो नित्य है।

ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि॥ २ ॥

मैं शास्त्रों में वर्णित सत्य कहता हूँ।
मैं अनुभवजन्य सत्य कहता हूँ।

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्।
अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्।
अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्।
अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्।
सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्॥ ३ ॥

कृपया मेरी रक्षा करें।
पाठ करने वाले की रक्षा करें।
सुनने वाले की रक्षा करें।
[इस ज्ञान के] दाता [श्रीगुरु] की रक्षा करें।
शिक्षक की रक्षा करें।
शिष्य की रक्षा करें।
पश्चिम से हमारी रक्षा करें।
पूर्व से हमारी रक्षा करें।
उत्तर से हमारी रक्षा करें।
दक्षिण से हमारी रक्षा करें।
ऊपर से हमारी रक्षा करें।
नीचे से हमारी रक्षा करें।
समस्त दिशाओं से हमारी रक्षा करें; सब ओर से हमारी रक्षा करें।

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः।
त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि॥ ४॥

आप वाक् [शब्द] के साकार रूप हैं; आप चिन्मय अर्थात् शुद्ध चिति हैं।
आप सर्वोच्च आनन्द हैं; आप ब्रह्म हैं।
आप सत्, चित् और अद्वितीय आनन्द हैं।
आप ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं।
आप ही ज्ञान और विज्ञान हैं।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति।
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति।
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि॥ ५ ॥

इस सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति आपसे ही हुई है।
आपमें ही यह सम्पूर्ण जगत स्थित है।
आपसे ही सम्पूर्ण जगत का लय होता है।
यह सम्पूर्ण जगत आपमें ही लौट जाता है।
आप ही भूमि, जल, अग्नि, वायु व नभ हैं।
आप ही वाणी के चार स्तर हैं।

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः।
त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्।
त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्।
त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिंद्रस्त्वं अग्निस्त्वं वायुस्त्वं
सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥ ६ ॥

आप तीनों गुणों से परे हैं।
आप तीनों शरीरों से परे हैं।
आप तीनों कालों से परे हैं।
आप मूलाधार चक्र में नित्य ही स्थित हैं।
तीनों शक्तियाँ आप ही हैं।
योगीजन सदैव आपका ही ध्यान करते हैं।
आप ही ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र हैं।
आप ही इन्द्र, अग्नि और वायु हैं।

आप ही सूर्य, चन्द्र, धरा और आकाश हैं।
आप ही परमसत्य हैं। आप पावन अक्षर ॐ का मूर्तरूप हैं।

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्।
अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धम्।
एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्।
अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्।
नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः।
सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः।
गणपतिर्देवता।
ॐ गं गणपतये नमः॥ ७॥

सर्वप्रथम 'गण' शब्द के 'ग्' स्वर का उच्चारण किया जाता है,
तत्पश्चात् 'अ' का जो कि वर्णमाला का प्रथम अक्षर है।
उसमें अनुस्वार जोड़ा जाता है।
उसे चन्द्रबिन्दु से सुशोभित किया जाना चाहिए।
यह आपके बीजमन्त्र का स्वरूप है।
पूर्वरूप अर्थात् प्रथम अक्षर है 'ग्'।
मध्यरूप अर्थात् मध्य अक्षर है 'अ'।
अन्तिम रूप अर्थात् अन्त का अक्षर है 'म्' [अनुस्वार]।
उत्तररूप अर्थात् सबसे अन्तिम स्वरूप बिन्दु है।
यह नाद आपके साथ एकाकार होने का उपाय है।
सम्पूर्ण मन्त्र का उच्चारण ही आपसे सन्धि अर्थात् जुड़ाव है।
यह गणेश भगवान की पावन विद्या है।
इस मन्त्र के ऋषि गणक हैं।

मन्त्र का छन्द निचृद्गायत्री है।
मन्त्र के देवता गणपति हैं।
ॐ। मैं भगवान श्रीगणेश को नमन करता हूँ।

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥ ८॥

हम उन्हें जानें जो एकदन्त हैं।
हम उनका ध्यान करें जिनकी सूँड़ वक्र है।
वे एकदन्त भगवान उस ज्ञान को व हमारे ध्यान को प्रेरित करें।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्॥
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात् परम्।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥ ९॥

वे एकदन्त हैं, चर्तुभुज हैं, जिन्होंने पाश और अंकुश धारण किया है,
हाथ में दन्त धारण किया है; अभयमुद्रा में उठा जिनका हाथ अभय प्रदान करता है
और जिनका वाहन मूषक है जो कि प्रज्ञान का प्रतीक है;
जो रक्तवर्ण हैं, जिनका उदर विशाल है
और जिनके कर्ण सूप की तरह हैं;

जिन्होंने लाल रंग के वस्त्र धारण किए हैं, जिनके शरीर पर लाल रंग का गन्धलेप लगा है,
और लाल रंग के पुष्पों से जिनकी पूजा होती है;
जो अपने भक्तों के प्रति करुणामय हैं
और जो जगत का कारणरूप हैं; अविनाशी हैं;
जिनका आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में हुआ था
और जो प्रकृति व पुरुष के परे हैं।
जो योगी इस प्रकार भगवान श्रीगणेश का निरन्तर ध्यान करता है,
वह योगियों में सर्वश्रेष्ठ है।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये।
नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने।
शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥ १० ॥

उन्हें नमन जो समस्त जनों के स्वामी हैं।
उन्हें नमन जो समस्त गणों के स्वामी हैं।
उन्हें नमन जो प्रमथपति हैं अर्थात् जो भगवान शिव की सेवा में रत गणों के स्वामी हैं।
उन एकदन्त को नमन जिनका उदर विशाल है।
उन विघ्ननाशक को नमन जो भगवान शिव के सुपुत्र हैं।
मैं उन्हें बार-बार नमस्कार करता हूँ जो आशीर्वादों के प्रदाता, वरदमूर्ति हैं।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

एक-साथ हमारी रक्षा हो।

एक-साथ हमारा पोषण हो।

हम साथ मिलकर श्रेष्ठ कार्य करें।

हमारा अध्ययन महान फल देने वाला तेजोमय हो।

हममें कभी एक-दूसरे के प्रति द्वेष न हो।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

जॉन ए. ग्राइम्स द्वारा लिखित *Ganapati: Song of the Self*, द स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस © १९९५, स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क की अनुमति से अंग्रेज़ी भाषान्तर प्रकाशित। सर्वाधिकार सुरक्षित।